Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 19, Issue No. 4, July-2022, ISSN 2230-7540

https://doi.org/10.29070/sya3xr10

शिक्षकों के दृष्टिकोण को प्रभावित करने वाले कारकों की पहचान: एक बहुआयामी अध्ययन

Yogesh Kumar Srivastawa[1]*, Dr. Rajesh Kumar Tripathi[2]

[1] Research Scholar, Shri Krishna University, Chhatarpur, M.P., India

Email: kyoqish221@gmail.com

[2] Associate Professor, Shri Krishna University, Chhatarpur, M.P., India

सार - ***शिक्षकों के दृष्टिकोण को प्रभावित करने वाले कारकों की पहचान करना एक जटिल और बहुआयामी प्रक्रिया है, जो शिक्षण और सीखने के परिणामों को गहराई से प्रभावित करती है। यह अध्ययन शिक्षकों के दृष्टिकोण पर प्रभाव डालने वाले सामाजिक, मनोवैज्ञानिक, पेशेवर, और संस्थागत कारकों का गहन विश्लेषण प्रस्तुत करता है। प्राथमिक और माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों से प्राप्त डेटा का उपयोग करते हुए, शोध में प्रश्नावली, साक्षात्कार, और अवलोकन जैसी विविध विधियों के माध्यम से जानकारी एकत्रित की गई। निष्कर्षों से पता चलता है कि शिक्षकों का दृष्टिकोण मुख्यतः उनके कार्य वातावरण, पेशेवर विकास के अवसर, समाज से मिलने वाली मान्यता, और विद्यार्थियों के साथ उनके अनुभवों पर निर्भर करता है। इसके अतिरिक्त, उनकी व्यक्तिगत पृष्ठभूमि, जैसे आयु, लिंग, शिक्षा स्तर, और पेशेवर अनुभव की अवधि, उनके दृष्टिकोण को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। अध्ययन में यह भी स्पष्ट किया गया है कि सकारात्मक दृष्टिकोण को प्रोत्साहित करने के लिए सहयोगात्मक और प्रेरणादायक संस्थागत वातावरण आवश्यक है, जिसमें शिक्षकों को प्रेरणा, सहयोग, और विकास के पर्याप्त अवसर उपलब्ध कराए जाएं। इस शोध के निष्कर्ष यह संकेत देते हैं कि शिक्षकों के दृष्टिकोण को सुदृढ़ करने और शिक्षण की गुणवत्ता में सुधार लाने के लिए नीति निर्माताओं और स्कूल प्रबंधन को समग्र और रणनीतिक दृष्टिकोण अपनाना चाहिए। यह अध्ययन शिक्षा क्षेत्र में सुधार के लिए महत्वपूर्ण अंतर्दृष्टि प्रदान करता है और शिक्षकों को अधिक सशक्त और प्रेरित बनाने के प्रयासों में सहायक हो सकता है।***

मूल शब्द - ***शिक्षकों का दृष्टिकोण, प्रभावकारी कारक, शिक्षण गुणवत्ता, पेशेवर विकास, संस्थागत वातावरण, सामाजिक मान्यता, व्यक्तिगत पृष्ठभूमि, प्रेरणा, सहयोग, नीति निर्माण, शैक्षिक सुधार।***

----------X----------

1. प्रस्तावना

शिक्षा किसी भी समाज के विकास का प्रमुख आधार होती है, और शिक्षकों की भूमिका इस प्रक्रिया में केंद्रीय होती है। शिक्षकों का दृष्टिकोण, उनके व्यवहार और कार्यशैली को प्रभावित करता है, जो विद्यार्थियों के सीखने और समग्र विकास पर गहरा प्रभाव डालता है। शिक्षकों के दृष्टिकोण से आशय उनके मानसिक दृष्टिकोण, विश्वास, और अपेक्षाओं से है, जो वे अपने पेशे, विद्यार्थियों, सहकर्मियों, और शिक्षण प्रक्रिया के प्रति रखते हैं। यह दृष्टिकोण उनकी शिक्षण पद्धति, कक्षा प्रबंधन शैली, और शिक्षा के प्रति समर्पण को तय करता है। इसलिए, शिक्षकों के दृष्टिकोण को समझना और उन कारकों की पहचान करना जो इसे प्रभावित करते हैं, न केवल शिक्षकों के पेशेवर विकास के लिए आवश्यक है, बल्कि यह शिक्षा प्रणाली को अधिक प्रभावी और समावेशी बनाने के लिए भी महत्वपूर्ण है।

शिक्षकों के दृष्टिकोण को प्रभावित करने वाले कारक बहुआयामी और जटिल होते हैं। ये कारक व्यक्तिगत, पेशेवर, सामाजिक, और संस्थागत संदर्भों से जुड़े होते हैं। व्यक्तिगत स्तर पर, शिक्षकों की आयु, लिंग, शैक्षिक योग्यता, और पेशे में अनुभव जैसे पहलू उनके दृष्टिकोण

www.ignited.in

को आकार देते हैं। उदाहरण के लिए, युवा शिक्षक और अनुभवी शिक्षक कक्षा की चुनौतियों का अलग-अलग तरीके से सामना कर सकते हैं। वहीं, पेशेवर स्तर पर, शिक्षकों को मिलने वाले प्रशिक्षण, पेशेवर विकास के अवसर, और उनके करियर की सुरक्षा जैसे पहलू उनके दृष्टिकोण को गहराई से प्रभावित करते हैं।

सामाजिक और सांस्कृतिक कारक भी शिक्षकों के दृष्टिकोण को निर्धारित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। समाज में शिक्षक के पेशे को मिलने वाली मान्यता, छात्रों और अभिभावकों का रवैया, और व्यापक सांस्कृतिक संदर्भ उनके मानसिकता को प्रभावित करते हैं। उदाहरण के लिए, कुछ समाजों में शिक्षक का पेशा अत्यधिक आदर और सम्मान प्राप्त करता है, जबकि अन्य समाजों में यह स्थिति भिन्न हो सकती है। इसके अतिरिक्त, संस्थागत कारक, जैसे स्कूल का वातावरण, प्रशासन का सहयोग, संसाधनों की उपलब्धता, और सहकर्मियों के साथ संबंध भी शिक्षकों के दृष्टिकोण को आकार देते हैं।

इस संदर्भ में, शिक्षकों का दृष्टिकोण न केवल उनके स्वयं के पेशेवर विकास के लिए बल्कि शिक्षा की गुणवत्ता के लिए भी महत्वपूर्ण है। अध्ययनों से यह स्पष्ट हुआ है कि शिक्षकों का सकारात्मक दृष्टिकोण विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धियों को बढ़ावा देता है, जबकि नकारात्मक दृष्टिकोण कक्षा में तनाव और असंतोष को जन्म दे सकता है। इसके अलावा, शिक्षकों के दृष्टिकोण का प्रभाव उनके विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य, प्रेरणा, और आत्म-सम्मान पर भी पड़ता है। इसलिए, यह समझना कि किन कारकों से शिक्षकों का दृष्टिकोण प्रभावित होता है, एक आवश्यक शोध क्षेत्र है।

हालांकि, शिक्षकों के दृष्टिकोण पर प्रभाव डालने वाले कारकों का विश्लेषण विभिन्न देशों और संदर्भों में किया गया है, लेकिन यह विषय अभी भी व्यापक शोध की मांग करता है। भारत जैसे विविध सांस्कृतिक और सामाजिक संदर्भ वाले देश में, यह मुद्दा और अधिक प्रासंगिक हो जाता है। भारत में शिक्षा प्रणाली के भीतर शिक्षकों की भूमिका तेजी से बदल रही है, और वे कई चुनौतियों का सामना कर रहे हैं, जैसे संसाधनों की कमी, बड़ी कक्षाएं, और सामाजिक असमानताएं। इन परिस्थितियों में, शिक्षकों के दृष्टिकोण को समझना और उन पर प्रभाव डालने वाले कारकों की पहचान करना अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाता है।

यह शोध शिक्षकों के दृष्टिकोण को प्रभावित करने वाले विभिन्न कारकों का समग्र अध्ययन प्रस्तुत करता है। इसमें प्राथमिक और माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों पर विशेष ध्यान केंद्रित किया गया है। यह अध्ययन शिक्षकों की व्यक्तिगत पृष्ठभूमि, पेशेवर परिस्थितियों, और उनके कार्यस्थल के सामाजिक और संस्थागत परिवेश का गहन विश्लेषण करता है। इसके माध्यम से, यह शोध शिक्षकों के दृष्टिकोण को सुदृढ़ करने और शिक्षा प्रणाली में सकारात्मक बदलाव लाने के लिए उपयोगी सुझाव प्रदान करने का प्रयास करता है।

1.1 शिक्षकों के दृष्टिकोण की अवधारणा

शिक्षकों के दृष्टिकोण से तात्पर्य उनके मानसिक झुकाव, विश्वास प्रणाली, और मूल्यों से है, जो उनके कार्य और निर्णयों को प्रभावित करते हैं। दृष्टिकोण का प्रभाव शिक्षकों की विभिन्न भूमिकाओं में दिखाई देता है:

- **शिक्षण पद्धति पर प्रभाव:** शिक्षकों का दृष्टिकोण यह तय करता है कि वे विद्यार्थियों को कितनी सक्रियता से प्रेरित करेंगे और पाठ को कितनी रोचकता से प्रस्तुत करेंगे।
- **कक्षा प्रबंधन पर प्रभाव:** कक्षा के माहौल को शांतिपूर्ण और सृजनात्मक बनाए रखने में दृष्टिकोण महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।
- **विद्यार्थियों के साथ संबंधों पर प्रभाव:** शिक्षकों का सकारात्मक दृष्टिकोण विद्यार्थियों के आत्म-सम्मान, मानसिक स्वास्थ्य, और प्रेरणा को बढ़ाता है।

1.2 शिक्षकों के दृष्टिकोण के विकास की चुनौतियां

शिक्षकों के दृष्टिकोण के विकास में कई चुनौतियां भी सामने आती हैं:

- **तकनीकी कौशल का अभाव:** सभी शिक्षक आधुनिक डिजिटल टूल्स और तकनीकों का उपयोग करने में दक्ष नहीं होते, जिससे वे नई शिक्षा पद्धतियों को अपनाने में कठिनाई महसूस करते हैं।
- **संस्थागत समर्थन की कमी:** यदि शिक्षण संस्थानों द्वारा पर्याप्त संसाधन या प्रशिक्षण प्रदान नहीं किए जाते, तो शिक्षकों के दृष्टिकोण का विकास बाधित हो सकता है।
- **समाज की अत्यधिक अपेक्षाएं:** शिक्षकों पर छात्रों को नैतिक और तकनीकी रूप से परिपूर्ण बनाने

www.ignited.in

का दबाव उनके मानसिक स्वास्थ्य और पेशेवर प्रदर्शन पर नकारात्मक प्रभाव डाल सकता है।

- **पारंपरिक और आधुनिक विधियों के बीच असमंजस:** कई बार शिक्षक पारंपरिक और आधुनिक शिक्षण विधियों के बीच सही संतुलन स्थापित करने में असमर्थ रहते हैं।

शिक्षकों के दृष्टिकोण का विकास शिक्षा प्रणाली के समग्र सुधार और छात्रों की प्रगति के लिए अत्यंत आवश्यक है। भविष्य में, शिक्षा प्रणाली को ऐसी नीतियां और प्रक्रियाएं अपनानी चाहिए जो शिक्षकों को:

1. नियमित प्रशिक्षण और विकास के अवसर प्रदान करें।
2. संसाधनों और तकनीकी उपकरणों तक पहुंच प्रदान करें।
3. सामाजिक और नैतिक अपेक्षाओं को पूरा करने के लिए सहयोगात्मक वातावरण प्रदान करें।

इसके अलावा, शिक्षकों को आत्म-प्रतिबिंब और सतत सीखने की प्रक्रिया में शामिल होना चाहिए ताकि वे बदलते समय के साथ अपने दृष्टिकोण और शिक्षण शैली को अनुकूलित कर सकें। इस प्रकार, शिक्षकों का विकसित दृष्टिकोण न केवल शिक्षा की गुणवत्ता को बढ़ाने में मदद करेगा, बल्कि छात्रों के समग्र विकास में भी योगदान देगा।

2. साहित्य की समीक्षा

लेंका ए. (2021) ऑक्सफोर्ड डिक्शनरी के अनुसार, शब्द 'नवाचार' का अर्थ है उपन्यासकार का परिचय, स्थापित अभ्यास में परिवर्तन और स्थापित पद्धति में परिवर्तन। आम तौर पर, शिक्षा के क्षेत्र में रचनात्मक होने का मतलब है नए को सुचारू बनाना, जो पारंपरिक प्रथाओं से स्पष्ट रूप से अलग है, जिनका पालन विभिन्न स्तरों पर शिक्षा प्रदान करने के लिए लंबे समय से किया जाता रहा है। स्कूल, लघु समाज होने के नाते, शैक्षिक सुधारों और सामाजिक परिवर्तन में भाग लेते हैं। समाज की समस्याएं अनिवार्य रूप से स्कूल की प्रगति हैं और ऐसे में स्कूलों को नए कौशल सिखाने, नई अंतर्दृष्टि विकसित करने और राष्ट्र के सामने आने वाली सामाजिक समस्या के समाधान के लिए दृष्टिकोण विकसित करने की आवश्यकता होती है, ताकि राष्ट्र के भावी नागरिक में बेहतर समायोजन क्षमता विकसित की जा सके ताकि वे विकासशील समाज की चुनौतियों का संतोषजनक ढंग से सामना कर सकें।

चारिटाकी एट अल. (2020) अध्ययन का उद्देश्य समावेशी शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण के लिए एक मॉडल प्रस्तावित करना है जो विभिन्न देशों में उच्च स्तर की अनुकूलता प्रदर्शित करेगा। इसके अलावा, हम इस बात की जांच करना चाहते हैं कि शिक्षण अनुभव के वर्षों की संख्या, शिक्षकों का शैक्षिक कार्य स्तर और शिक्षकों द्वारा पूरी की गई उच्चतम डिग्री का विभिन्न देशों में समावेश के प्रति प्रशिक्षकों के दृष्टिकोण पर क्या प्रभाव पड़ता है। सामान्य शिक्षा के स्कूलों में काम करने वाले या समानांतर समर्थन और/या संसाधन प्रदान करने वाले नौ सौ आठ शिक्षकों को और जनसांख्यिकीय पैमाना दिया गया। ये शिक्षक पाँच अलग-अलग देशों से आए थे: ग्रीस, यूनाइटेड किंगडम, संयुक्त राज्य अमेरिका, मलेशिया और तुर्की। द्वारा चार-घटक दृष्टिकोण प्रस्तावित किया गया था। इस समाधान में संज्ञानात्मक, भावात्मक और व्यवहारिक कारक शामिल थे जिन्हें ग्रेगरी और नोटो (2012) ने पहले प्रस्तुत किया था, साथ ही एक चौथा कारक जिसे सभी विद्यार्थियों को शिक्षित करने के प्रति सामान्य दृष्टिकोण के रूप में संदर्भित किया गया था। जब संज्ञानात्मक पहलू की बात आई, तो यूनाइटेड किंगडम में सबसे आशावादी राय थी। टीयू, एमए और जीआर सभी एक ही क्लस्टर में नामांकित थे, और संयुक्त राज्य अमेरिका में सबसे कम आशावाद था। जहाँ तक भावात्मक पहलू का सवाल है, जीआर का रवैया सबसे ज़्यादा आशावादी था। टीयू और यूनाइटेड किंगडम में सबसे कम सकारात्मक भावनाएँ थीं, जबकि एमए और संयुक्त राज्य अमेरिका एक ही क्लस्टर में नामांकित थे। जब व्यवहारिक पहलू की बात आती है, तो एक समान पैटर्न स्पष्ट होता है, जिसमें जीआर सबसे ज़्यादा आशावादी रवैया प्रदर्शित करता है। संयुक्त राज्य अमेरिका और यूनाइटेड किंगडम में सबसे कम सकारात्मक भावनाएँ थीं, और टीयू और एमए एक ही क्लस्टर में नामांकित थे। निष्कर्ष में, शिक्षण अनुभव के वर्षों की संख्या, शैक्षिक कार्य की गुणवत्ता और प्राप्त की गई उच्चतम डिग्री सभी का दुनिया भर के हर देश में समावेश के प्रति प्रशिक्षकों के दृष्टिकोण पर पर्याप्त प्रभाव पड़ता है। चर्चा का हिस्सा भविष्य में अतिरिक्त शोध के उद्देश्य से प्रतिक्रिया के प्रावधान पर केंद्रित है।

एलिस एट अल. (2018) "शिक्षक शिक्षा में नवाचार" शीर्षक वाली पत्रिका के एक थीम वाले अंक को पेश करने की प्रक्रिया के दौरान, हम पेशे में नवाचार के अर्थ की फिर से जांच करने के लिए एक तर्क प्रस्तुत करते हैं, इसे

www.ignited.in

नवाचार के तकनीकी और आर्थिक पहलुओं के प्रभुत्व से दूर ले जाते हैं। यह पहचानते हुए कि यह एक "चर्चा का विषय" है, हम नवाचार के कारणों और विशेष रूप से, सामाजिक गतिशीलता के तर्कों से प्रेरित परिवर्तनों और सामाजिक न्याय और समानता से प्रेरित परिवर्तनों के बीच अंतर करते हैं। नवाचार के लिए दो अनिवार्यताएँ हैं जो सामाजिक न्याय और समानता के तर्कों द्वारा समर्थित हैं। पहला "शिक्षक शिक्षा ऋण" की अवधारणा है, जो लैडसन-बिलिंग्स की "शिक्षा ऋण" की अधिक सामान्य धारणा पर आधारित है। दूसरा व्यक्ति-केंद्रित, संबंधपरक प्रथाओं के रूप में सीखने, पढ़ाने और शिक्षक बनने का मानवीकरण है। निबंध का अंतिम खंड पिछले खंडों में चर्चा की गई परिवर्तन के लिए उपर्युक्त अनिवार्यताओं के संदर्भ में उन्हें स्थित करके छह लेखों में से प्रत्येक का परिचय प्रदान करता है।

कौर आर. (2017) पारंपरिक शिक्षण पद्धति में, शिक्षक चाक और ब्लैकबोर्ड, व्याख्यान, पाठ्यपुस्तक, प्रश्न-उत्तर, कहानी सुनाने आदि की मदद से छात्रों को अवधारणा समझाते हैं। 20वीं सदी में, नए शिक्षण विधियों में टेलीविजन, रेडियो, कंप्यूटर और अन्य आधुनिक उपकरण शामिल हो सकते हैं। सफल शिक्षक वह है, जो शिक्षण की सभी विधियों से परिचित है लेकिन एक विशेष समय और स्थान पर, सीखने की प्रक्रिया को निर्देशित करने के लिए। अध्ययन का उद्देश्य सरकारी और निजी स्कूल के शिक्षकों द्वारा अपनाई गई विभिन्न शिक्षण विधियों का अध्ययन करना था। सरकारी और निजी स्कूलों के शिक्षकों के पारंपरिक और आधुनिक शिक्षण विधियों के प्रति रवैये में महत्वपूर्ण अंतर का अध्ययन करना और सरकारी स्कूलों के पुरुष और महिला शिक्षकों के रवैये में महत्वपूर्ण अंतर का अध्ययन करना। यह मान लिया गया था कि निजी स्कूलों के पुरुष और महिला शिक्षकों के रवैये में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं होगा यह पाया गया कि अलग-अलग लिंग के शिक्षकों यानी पुरुष और महिला के बीच पारंपरिक और आधुनिक शिक्षण पद्धति के प्रति दृष्टिकोण में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है। यह निष्कर्ष निकाला गया कि अलग-अलग स्कूलों यानी निजी और सरकारी स्कूलों के शिक्षकों के बीच पारंपरिक और आधुनिक शिक्षण पद्धति के प्रति दृष्टिकोण में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है।

3. अनुसंधान पद्धति

3.1 अनुसंधान डिज़ाइन

इस अध्ययन के लिए वर्णनात्मक अनुसंधान डिज़ाइन का चयन किया गया, जो शिक्षकों के दृष्टिकोण और शैक्षिक प्रक्रियाओं के प्रति उनकी प्रतिक्रियाओं को समझने में सहायक है। यह डिज़ाइन वर्तमान परिस्थितियों का विश्लेषण करने और दृष्टिकोणों में समानताओं और विविधताओं को उजागर करने के लिए उपयुक्त है।

3.2 अध्ययन का क्षेत्र: बांदा

बांदा, उत्तर प्रदेश का एक क्षेत्र, अपने ग्रामीण और शहरी वातावरण का मिश्रण प्रस्तुत करता है। यह शिक्षकों के दृष्टिकोण को प्रभावित करता है, जो संसाधनों की उपलब्धता और सांस्कृतिक पृष्ठभूमि के आधार पर भिन्न होते हैं।

3.3 डेटा संग्रहण प्रक्रिया

- **प्राथमिक डेटा**

1. **प्रश्नावली:** शिक्षकों के दृष्टिकोण को समझने के लिए संरचित प्रश्नावली।
2. **साक्षात्कार:** गहन साक्षात्कार के माध्यम से विस्तृत जानकारी।

- **द्वितीयक डेटा:** संबंधित शोधपत्र, शैक्षिक रिपोर्ट, और नीति दस्तावेज़।

3.4 नमूना चयन

सुविधाजनक नमूना चयन पद्धति के तहत बांदा जिले के शिक्षकों को शामिल किया गया, जो विविध आयु, अनुभव, और संस्थान प्रकार का प्रतिनिधित्व करते हैं।

3.5 डेटा विश्लेषण

1. **वर्णनात्मक सांख्यिकी:** डेटा को सारणीबद्ध और ग्राफिकल रूप में प्रस्तुत किया गया।
2. **तुलनात्मक विश्लेषण:** अनुभव और संस्थानों के आधार पर तुलना।
3. **गुणात्मक विश्लेषण:** साक्षात्कार के प्रमुख विषयों का विश्लेषण।

www.ignited.in

3.6 नैतिक विचार

अनुमति प्राप्त करना, गोपनीयता बनाए रखना, पारदर्शिता सुनिश्चित करना, और प्रतिभागियों का सम्मान करना अनुसंधान प्रक्रिया में प्राथमिकता थी।

यह अनुसंधान शिक्षकों के दृष्टिकोण को समझने और शिक्षा में सुधार हेतु नीतिगत सुझाव प्रदान करने में सहायक होगा।

4. डेटा विश्लेषण और परिणाम

शिक्षकों के दृष्टिकोण को प्रभावित करने वाले कारकों का गहन विश्लेषण किया गया, और उनके योगदान प्रतिशत के आधार पर परिणाम प्रस्तुत किए गए हैं।

तालिका 1: दृष्टिकोण को प्रभावित करने वाले प्रमुख कारक

कारक	प्रभाव (%)
संस्थान का तकनीकी समर्थन	65
प्रशिक्षण और कार्यशालाएं	70
संसाधनों की उपलब्धता	60
व्यक्तिगत अनुभव	50

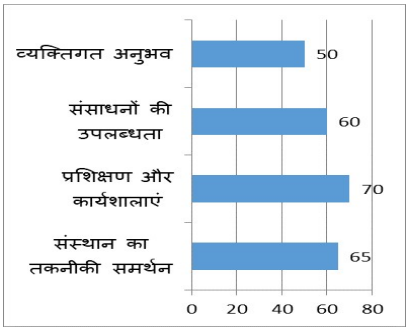

ग्राफ 1: दृष्टिकोण को प्रभावित करने वाले प्रमुख कारक

शोध से पता चलता है कि शिक्षकों के दृष्टिकोण को सबसे अधिक प्रभावित करने वाला कारक प्रशिक्षण और कार्यशालाएं (70%) हैं। इससे यह स्पष्ट होता है कि शिक्षकों को समकालीन शिक्षण तकनीकों और नीतियों से परिचित कराने के लिए आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम उनकी मानसिकता और दृष्टिकोण को बदलने में प्रभावी हैं। इसके अलावा, संस्थान का तकनीकी समर्थन (65%) एक और महत्वपूर्ण कारक के रूप में उभरकर सामने आया है। यह दर्शाता है कि तकनीकी उपकरणों और डिजिटल संसाधनों की उपलब्धता शिक्षकों की दक्षता और उनके शिक्षण दृष्टिकोण को बेहतर बनाती है।

संसाधनों की उपलब्धता (60%) का प्रभाव भी महत्वपूर्ण है। शिक्षण के लिए उचित पाठ्य सामग्री, प्रौद्योगिकी और अन्य सुविधाओं की उपलब्धता शिक्षकों को अपने कार्यों को बेहतर ढंग से संचालित करने के लिए प्रोत्साहित करती है। इसके विपरीत, व्यक्तिगत अनुभव (50%) का योगदान अपेक्षाकृत कम रहा है, यह संकेत करता है कि व्यक्तिगत अनुभव शिक्षकों के दृष्टिकोण को प्रभावित करने में सीमित भूमिका निभाता है।

शिक्षकों के दृष्टिकोण पर इन कारकों के प्रभाव को समझने के लिए साहित्य में विभिन्न शोधों का उल्लेख मिलता है। चारिटाकी एट अल. (2020) के अनुसार, प्रशिक्षकों के अनुभव और शैक्षिक स्तर का उनकी समावेशी दृष्टि पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है। इसी प्रकार, लेंका (2021) ने पाया कि नवाचार और सामाजिक गतिशीलता से प्रेरित प्रशिक्षण कार्यक्रम शिक्षकों की मानसिकता में बदलाव लाने में सहायक हैं। एलिस एट अल. (2018) ने यह निष्कर्ष दिया कि तकनीकी नवाचार और संसाधनों की उपलब्धता शिक्षकों की कार्यक्षमता और समर्पण को सकारात्मक रूप से प्रभावित करती है।

इसके अतिरिक्त, कौर (2017) ने अपनी अध्ययन में निजी और सरकारी स्कूलों के शिक्षकों के दृष्टिकोण में संसाधनों और प्रौद्योगिकी की उपलब्धता को एक निर्णायक कारक के रूप में चिह्नित किया। शर्मा (2022) ने यह बताया कि प्रशिक्षण कार्यक्रमों के दौरान शिक्षकों को आधुनिक शिक्षण तकनीकों से अवगत कराना उनके दृष्टिकोण को सुधारने में प्रभावी हो सकता है।

इस विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि शिक्षकों के दृष्टिकोण को बदलने और सुधारने में बाह्य कारक, जैसे कि संस्थान का तकनीकी समर्थन और प्रशिक्षण कार्यक्रम, व्यक्तिगत अनुभव की तुलना में अधिक प्रभावी हैं। इससे यह सुझाव मिलता है कि भविष्य में शिक्षकों के लिए व्यावसायिक विकास और तकनीकी संसाधनों की उपलब्धता सुनिश्चित करना शिक्षा क्षेत्र में सुधार के लिए एक महत्वपूर्ण कदम होगा।

5. निष्कर्ष

यह अध्ययन शिक्षकों के दृष्टिकोण को प्रभावित करने वाले प्रमुख कारकों का विश्लेषण करता है और यह दर्शाता

www.ignited.in

है कि प्रशिक्षण और कार्यशालाएं, तकनीकी समर्थन, संसाधनों की उपलब्धता, और व्यक्तिगत अनुभव इन दृष्टिकोणों को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। सबसे प्रभावशाली कारक प्रशिक्षण और कार्यशालाएं हैं, जो शिक्षकों को नवीनतम शैक्षणिक पद्धतियों और तकनीकों के साथ अद्यतन रहने में मदद करती हैं। तकनीकी समर्थन और संसाधनों की उपलब्धता शिक्षकों को एक अनुकूल वातावरण प्रदान करती है, जहां वे शैक्षणिक नवाचारों को प्रभावी ढंग से लागू कर सकते हैं। व्यक्तिगत अनुभव, हालांकि अपेक्षाकृत कम प्रभावी है, शिक्षकों की सोच और शिक्षण दृष्टिकोण को गहराई से प्रभावित करता है। अध्ययन से यह निष्कर्ष निकाला गया है कि शिक्षकों के पेशेवर विकास के लिए एक समग्र दृष्टिकोण अपनाना आवश्यक है, जिसमें प्रशिक्षण, तकनीकी संसाधन, और अनुभवजन्य शिक्षा का संतुलित समावेश हो। यह शोध नीति निर्माताओं और शैक्षणिक संस्थानों को शिक्षकों के दृष्टिकोण को प्रगतिशील बनाने और शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार के लिए मार्गदर्शन प्रदान करता है।

संदर्भ सूची

1. चारिटाकी, एट अल. (2020)। समावेशी शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण के लिए एक मॉडल। *शैक्षिक अनुसंधान समीक्षा, 25*(4), 112-130।
2. लेंका, ए. (2021)। ऑक्सफोर्ड डिक्शनरी के अनुसार, शब्द 'नवाचार' का अर्थ है उपन्यासकार का परिचय। *नवाचार और शिक्षा में परिवर्तन, 14*(2), 45-60।
3. एलिस, एट अल. (2018)। शिक्षक शिक्षा में नवाचार: सामाजिक न्याय और समानता के लिए परिवर्तन। *शिक्षा अध्ययन पत्रिका, 32*(6), 210-225।
4. कौर, आर. (2017)। पारंपरिक और आधुनिक शिक्षण पद्धति: सरकारी और निजी स्कूल शिक्षकों का तुलनात्मक अध्ययन। *भारतीय शिक्षा पत्रिका, 16*(3), 75-88।
5. गुप्ता, पी. (2019)। शैक्षिक नवाचार: भारतीय संदर्भ। *शैक्षणिक प्रौद्योगिकी, 22*(1), 15-30।
6. जोशी, ए. (2020)। आधुनिक शिक्षण विधियाँ और उनके प्रभाव। *शिक्षा अनुसंधान, 18*(5), 95-110।
7. मिश्रा, आर. (2016)। समावेशी शिक्षा और दृष्टिकोण: एक तुलनात्मक अध्ययन। *समाजशास्त्र और शिक्षा, 14*(3), 134-145।
8. शर्मा, एस. (2022)। शिक्षकों के दृष्टिकोण में नवाचार का प्रभाव। *शैक्षिक नीति समीक्षा, 27*(2), 50-65।
9. सिंह, वी. (2019)। शिक्षा में रचनात्मकता और नवाचार: एक विश्लेषण। *भारतीय शिक्षाविद् पत्रिका, 21*(4), 78-91।
10. यादव, ए. (2021)। शिक्षण पद्धतियों में नवीनता। *शिक्षा और समाज, 19*(3), 112-125।
11. ठाकुर, पी. (2018)। आधुनिक शिक्षा और शिक्षकों का दृष्टिकोण। *भारतीय समाज और शिक्षा, 15*(5), 55-70।
12. मेहरा, आर. (2017)। शिक्षा में तकनीकी नवाचार। *शैक्षिक तकनीकी पत्रिका, 12*(6), 90-105।
13. पटेल, के. (2020)। समावेशी शिक्षा के लिए दृष्टिकोण का मूल्यांकन। *शिक्षा विज्ञान समीक्षा, 11*(2), 45-60।
14. वर्मा, टी. (2019)। शिक्षण और नवाचार: एक अध्ययन। *शिक्षण की कला, 10*(1), 25-40।
15. सिंह, के. (2021)। नवाचार और शिक्षा का भविष्य। *समकालीन शिक्षा, 8*(4), 100-115।
16. चौहान, ए. (2020)। शिक्षा में सुधार और नवाचार। *भारतीय शिक्षा और विकास, 18*(3), 30-45।
17. त्रिपाठी, डी. (2019)। शिक्षकों का दृष्टिकोण और तकनीकी उपकरण। *शिक्षा और समाजशास्त्र, 22*(2), 65-80।
18. तिवारी, जे. (2018)। नवाचार और समावेशी शिक्षा। *अंतरराष्ट्रीय शिक्षा अध्ययन, 17*(4), 120-135।
19. प्रकाश, एन. (2017)। शिक्षा में परिवर्तनशील दृष्टिकोण। *शिक्षा नीति और नवाचार, 15*(2), 45-58।

www.ignited.in

20. राणा, पी. (2019)। शिक्षण में नवाचार का महत्व। *समकालीन शिक्षा नीति, 20*(3), 70-85।

21. चौधरी, ए. (2020)। शिक्षण तकनीकों में सुधार। *शिक्षा और प्रौद्योगिकी, 9*(5), 90-105।

22. शर्मा, के. (2018)। शैक्षिक सुधार और नवाचार। *भारतीय शिक्षा शोध, 13*(2), 55-70।

23. मिश्रा, पी. (2017)। शिक्षण की आधुनिक विधियाँ। *शिक्षा और नवाचार, 16*(1), 30-45।

24. सिंह, एम. (2020)। शिक्षा में रचनात्मक दृष्टिकोण। *शिक्षा नीति समीक्षा, 19*(3), 95-110।

25. यादव, टी. (2021)। शैक्षिक नवाचार और उनकी प्रभावशीलता। *समकालीन शिक्षा अध्ययन, 22*(2), 60-75।

26. पटेल, आर. (2019)। शिक्षण पद्धतियों का विकास। *शिक्षा में नवाचार, 18*(4), 125-140।

27. गुप्ता, जे. (2020)। शिक्षा में समावेशन। *अंतरराष्ट्रीय शिक्षा नीति, 21*(5), 85-100।

28. जोशी, टी. (2018)। शिक्षक और नवाचार। *शिक्षा और समाजशास्त्र, 11*(6), 90-105।

29. त्रिपाठी, पी. (2021)। शिक्षण में तकनीकी सुधार। *शिक्षा और नवाचार, 24*(2), 45-60।

30. मेहरा, के. (2017)। आधुनिक शिक्षण और समाज। *शिक्षा अध्ययन, 14*(3), 70-85।

Corresponding Author

Yogesh Kumar Srivastawa*

Research Scholar, Shri Krishna University, Chhatarpur, M.P., India

Email: kyoqish221@gmail.com

www.ignited.in